Preface

अभियोजना

हिन्दी कविता के प्रति मेरी रुचि बचपन से ही रही है। अनेक प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ पढ़कर मैं आत्मविभोर होता रहा हूँ और मेरा यह भावात्मक लगाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही रहा है। अपने स्नात्कोत्तर अध्ययन के दरमियान मुझे हिन्दी कविता के गंभीर अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। जिससे मेरी साहित्यिक समझ में अभिवृद्धि हुई। मुझे हिन्दी कविता से कुछ ऐसा लगाव हुआ कि मैं विश्वविद्यालय में आगंतुक अतिथि कवियों को सुनने के लिए व्यग्र रहता, आस-पास आयोजित कवि संमेलनों एवं कवि-गोष्ठियों में उपस्थित रहकर हिन्दी कविता का रसानंद प्राप्त करता और हिन्दी की श्रेष्ठ और स्थापित पत्रिका में प्रकाशित कविता का अध्ययन और मनन करता। अपनी इस काव्य रुचि को अग्रसर करता।

सहयोग और सौभाग्य से इसी स्नातकोत्तर अध्ययन काल में जाने-माने विद्वान डॉ. विष्णु चतुर्वेदी हिन्दी के वरिष्ठ रीडर से संलग्न होने का अवसर मिला। डॉ. विष्णु चतुर्वेदीजी की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रोत्साहन और प्रेरणा ने मुझे हिन्दी के किसी विशिष्ट कवि के साहित्य का अनुशीलन एवं शोध परक अध्ययन

करने के लिए उत्साहित किया ।

स्नातकोत्तर उपरांत गुजरात में हिन्दी प्रचार के लिए समर्पित गुजरात के ही एक समर्थ साहित्यकार श्री जयसिंह 'व्यथित'जी के साहित्य सृजन से मैं अवगत हुआ और इससे प्रभावित होकर मैंने अहमदाबाद जाकर इस मनस्वी साहित्यकार से साक्षात्कार किया और उनके वृहद् साहित्य सृजन को देखकर मैंने तय कर लिया कि श्री जयसिंह 'व्यथित'जी की रचनाओं को केन्द्र में रखकर ही पीएच.डी हेतु शोधकार्य सम्पन्न करूँगा।

हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर डॉ. विष्णु चतुर्वेदी के अनुग्रह से तथा उनके प्रोत्साहन से मेरा विषय महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में पंजीकृत हो गया और मैंने ''कवि जयसिंह 'व्यथित', व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' पर अपना शोध कार्य प्रारंभ कर दिया।

वैसे तो डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी का अधिकांश साहित्य प्रकाशित हो चुका है। उनकी साहित्यिक प्रतिभा को सम्मान देते हुए उनके विषय में एक विशाल अभिनन्दनग्रंथ भी प्रस्तुत हो चुका है तथा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी उनकी साहित्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। अत: मुझे अपने विवेच्य विषय पर सामग्री उपलब्ध करने के लिए किसी विशेष अवरोध का सामना नहीं करना पड़ा। डॉ. विष्णु चतुर्वेदी के कुशल निर्देशन में नियत समय पर मैंने अपना यह शोध कार्य सम्पन्न कर लिया है।